''प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण''

डॉ. गौरी सिंह परते
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय महाविद्यालय मेंहदवानी
जिला–डिन्डौरी म.प्र.

सार

प्राकृतिक संरक्षण से अभिप्राय जल, जंगल, जमीन, निकायों की सुरक्षा से है तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण खनिजों, ईंधन, प्राकृतिक गैसों जैसे संसाधनों की सुरक्षा से है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि ये सब प्रचुर मात्रा में मनुष्य के उपयोग के लिए उपलब्ध रहे हैं। ऐसे कई तरीके हैं जिससे आम आदमी प्रकृति के संरक्षण में मदद् कर सकता है। दुर्भाग्य से मनुष्य इन संसाधनों का उपयोग करने के बजाए नई चीजों का आविष्कार करने में इतना सल्लीन हो गया है कि उसने उन्हें संरक्षित करने के महत्व को लगभग भुला दिया है। फलस्वरूप इन संसाधानों में से कई तेज गति से कम हो रहे हैं और यदि इसी तरह से ऐसा जारी रहा तो मानवों के साथ–साथ पृथ्वी पर रहने वाले अन्य जीवों का अस्तित्व मुश्किल में पड़ सकता है, इस लिए हम सब मिलकर कुछ ऐसा कदम अपने स्थानीय स्तर से लेकर विश्व तक उठाएं जिससे प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित किया जा सके।

प्रस्तावना :– संसाधन वे होते हैं जो उपयोगी हों या फिर मनुष्य को अपनी जरूरतों को पूरी करने के लिए उपयोगी बनाये जा सकते हों। ऐसे संसाधन जो उपयोग करने के लिये परोक्ष रूप से प्रकृति से प्राप्त होते हों, प्राकृतिक संसाधन हैं, जिनमें वायु, पानी जो वर्षा, झीलों, नदियों और कुओं द्वारा मृदा, भूमि, वन, जैवविविधता, खनिज, जीवाश्मीय ईंधन इत्यादि शामिल हैं। विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस 28 जुलाई को मनाया जाता है, जिसमें जल, जंगल, जमीन के बिना हमारी प्रकृति अधूरी है। लेकिन आज के समय में पेड़–पौधे वनस्पतियां बहुत से जीव–जंतु विलुप्त होते जा रहे हैं। विश्व प्रकृति दिवस का मुख्य उद्धेश्य विलुप्त हो रहे जीव–जंतु, वनस्पतियों को बचाना है। हमारा भारत देश वन्यजीवों जंगलों के लिए बहुत ही विख्यात है। तेजी से बढ़ रही आबादी वनस्पति और वन्य जीवों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रही है, जिससे यह सब विलुप्त होते जा रहे हैं। बहुत बड़ी मात्रा में जीवाश्म ईंधनों का प्रयोग उद्योगों एवं परिवहन के लिये किया जाता है। वनों का विनास जैव विविधता की हानि का कारण है जिससे भावी पीढ़ियों को जैव विविधता रूपी खजाने से वंचित होना पड़ेगा। यह अत्यंत आवश्यक है कि आगे प्राकृतिक संसाधनों के विभिन्नीकरण को रोका जा सके और उनका उपयोग एक न्याय एवं तर्कसंगत ढंग, सतत् रूप में करने के लिये आश्वस्त किया जाए। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग न्यायोचित ढंग से किया जाए, ऐसा ही शामिल है। इसलिये उनको व्यर्थ रूप में उपयोग नहीं, अपक्षय या अवक्रमित नहीं कर सकते हैं और ये संसाधन वर्तमान एवं भावी दोनों ही पीढ़ियों के लिये उपलब्ध रहे।

अर्थ :– प्रकृति संरक्षण पर्यावरण, पर्यावरण शब्द परि+आवरण से मिलकर बना हुआ है, जिसने परि का आशय है चारों, एवं आवरण का आशय है परिवेश प्रकृति संरक्षण। वनस्पतियों, जीव–जंतु प्राणियों और मानव जाति सहित सभी सजीवों और उनके साथ संबंधित भौतिक परिसर को पर्यावरण संरक्षण अर्थात प्रकृति संरक्षण कहते हैं। वास्तव में प्रकृति संरक्षण, जल, वायु, भूमि, पेड़–पौधे, मानव, जीव–जंतु उनकी गतिविधियों के समावेश का ही संरक्षण होता है। प्राकृतिक संसाधन वे संसाधन हैं जो प्रकृति से लिए गए हैं और कुछ संशोधनों के साथ उपयोग किए जाते हैं। इसमें वाणिज्यिक और औद्योगिक उपयोग, सोंदर्य मूल्य, वैज्ञानिक रूचि और सांस्कृतिक मूल्य जैसी मूल्यवान विशेषताओं के स्त्रोत शामिल हैं। पृथ्वी पर, इसमें सौर प्रकाश, वायुमंडल, जल, भूमि सभी खनिज के साथ–साथ सभी वनस्पति और पशु जीवन अंतर्गत है।

प्राकृतिक संसाधनों की परिभाषा :– मानव जीवन का अस्तित्व, प्रगति एवं विकास संसाधनों पर निर्भर करती है। आदिकाल से मनुष्य प्रकृतिसे विभिन्न प्रकार की वस्तुएॅ प्राप्त कर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करता रहा है। वास्तव में संसाधन वे हैं जिनकी उपयोगिता मानव के लिए हो। कोई भी जैविक एवं अजैविक पदार्थ तब तक संसाधन नहीं बन सकता, जब तक वह मानव के लिये उपयोगी न हो, अर्थात् वे पदार्थ या वस्तुऐं या ऊर्जा जो मानव की सहायता के लिये या किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिये प्रयोग किये जाते हैं, संसाधन कहलाते हैं।

प्राकृतिक संसाधनों का वर्गीकरण :– संसाधन अनेक प्रकार के होते हैं, जिनका वर्गीकरण विशेषज्ञों ने अध्ययन की सुविधा हेतु विविध प्रकार से किया है। इन वर्गीकरणों का आधार अधिकार क्षेत्र पुनः पूर्ति, वितरण क्षेत्र एवं उपयोगिता है। अधिकार क्षेत्र की दृष्टि से संसाधनों की तीन श्रेणियॉ क्रमशः 1.व्यक्तिगत, 2.राष्ट्रीय 3.अंतर्राष्ट्रीय अथवा विश्व संसाधनों के रूप में की जाती है।

इसी प्रकार वितरण की दृष्टि से संसाधनों को चार वर्गों में विभाजन किया जाता है।

1. सर्वसुलभ संसाधन, जैसे–वायु एवं उसमें उपस्थित विभिन्न गैस।
2. सामान्य सुलभ संसाधन, जैसे–कृषि भूमि, मृदा, पशुचरण भूमि आदि।
3. विरल संसाधन जो सीमित स्थानों पर उपलब्ध हैं, जैसे–सोना, यूरेनियम, पैट्रोलियम, तॉबा आदि विभिन्न खनिज।
4. केन्द्रित संसाधन जो विश्व में एक या दो स्थानों पर उपलब्ध हो जैसे–क्रायोलाइट धातु प्राकृतिक रूप में केवल ग्रीनलैण्ड में उपलब्ध है।

संसाधनों का पुनः पूर्ति की दृष्टि से वर्गीकरण है, क्योंकि संरक्षण की संकल्पना इसी पर निर्भर है। पुनः पूर्ति की दृष्टि से संसाधनों को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है– (1) **नवीनीकरणीय संसाधन** – (2) **नवीनीकरणीय संसाधन** –

नवीनीकरणीय संसाधन वे संसाधन हें जो पुनः प्रयोग में लिये जा सकते हैं अर्थात् इनका निर्माण निरंतर होता रहता है। प्राकृतिक क्रियाओं के फलस्वरूप संसाधन बनते रहते हैं और उनका निरंतर उपयोग होता रहता है। इसी से कुछ विद्वानों ने इन्हें असमाप्त या अक्षय संसाधन का नाम दिया है। इसके अंतर्गत प्राकृतिक क्रियाओं से संबंधित संसाधन जैसे जल, सौर ऊर्जा, ज्वार–भाटा शक्ति, पवन शक्ति, मृदा, वनस्पति आदि एवं प्रजननरत् जैव सांधन सम्मिलित किये जाते हैं। इसी के अंतर्गत जल विद्युत भी सम्मिलित की जाती है? जिसके संबंध में यह तर्क है कि जब तक जल प्रवाहित है, जल विद्युत उत्पादन संभव है। इन संसाधनों को प्रवाही संसाधन भी कहा जाता है। यद्यपि किसी भी संसाधन को अक्षय मानना वर्तमान काल में भ्रामक क्योंकि समय के साथ जो तकनीकी प्रगति हो रही है, उसका दुष्प्रभाव अनेक नवीनीकरणीय संसाधनों को नष्ट कर रहा है। जैसे प्राकृतिक वनस्पति का निर्दयता से शोषण होने के कारण विश्व के अनेक क्षेत्र आज वनस्पति विहीन हो गये हैं जबकि वनस्पति का यदि नियोजित उपयोग हो तो वह पुनः नवीनीकरण की क्षमता रखती है। इसी प्रकार अनेक वन्य जीवों की प्रजातियॉ लुप्त होती जा रही हैं। यहॉ तक कि सरिताओं का जल भी जलवायु परिवर्तन से सूखने लगा है। किन्तु यह सत्य है कि ये संसाधन उचित संरक्षण द्वारा निरंतर उपयोग में लाये जा सकते हैं।''[1]

अनवीनीकरणीय संसाधन :– अनवीनीकरणीय संसाधन जिन्हें निवर्तनीय संसाधन भी कहते हैं, वे संसाधन है, जिनका पुनः निर्माण निकट भविष्य में संभव नहीं है और जिनका एक बार उपयोग कर लेने से वे नष्ट हो जाते हैं। ऐसा नहीं है कि इनकी पुनर्स्थापना नहीं अपितु लाखों–करोड़ों वर्षों का समय लगता है। सभी के प्रकार के धात्विक एवं अधात्विक खनिज, प्रट्रोलियम, कोयला आदि इसी प्रकार के संसाधन हैं, जिनका निरंतर उपयोग उन्हें समाप्त कर सकता है, इस प्रकार के संसाधनों को लेकर आज विश्व के सभी राष्ट्र चिन्तित हैं और अनेक प्रकार से उनके संरक्षण के लिए प्रयत्नशील हैं।

(I) नवीनीकरणीय / अक्षय / प्रवाही संसाधन

A. **अपरिवर्तनीय संसाधन :–** जिनमें मनुष्य की गतिविधियों से कोई विशेष विपरीत परिवर्तन नहीं होता जैसे :– 1. आणविक शक्ति, 2. वायु ऊर्जा, 3. ज्वार शक्ति, 4. जल वृष्टि।

B. **दुरूपयोग संसाधन** – इनमें मनुष्य की गतिविधियों से परिवर्तन की संभावना रहती है तथा इनका उपयोग न होने पर ये क्षीण भी हो सकते हैं, इस प्रकार के संसाधन हैं :– 1 सौर्य शक्ति, 2 वायु मण्डल, 3 महासागरों, झीलों तथा नदियों का जल, 4 जल शक्ति।

उदाहरणार्थ : सौर ऊर्जा एक असमाप्य स्त्रोत है किंतु मानव की गतिविधियों से बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण पृथ्वी तक पहुॅचने वाली सौर ऊर्जा प्रभावित हो सकती है। सागर एवं झीलों की वनस्पति एवं जीव जंतु जल प्रदूषण से नष्ट हो रहे हैं। वनों के कटने से जल–स्त्रोत सूखने लगे हैं। तात्यर्प यह है कि इन संसाधनों का उपयोग सुनियोजित एवं वैज्ञानिक ढंग से किया जाना आवश्यक है।

(II) क्षयीय संसाधन :– इनके दो प्रमुख उप–विभाग हैं – 1. संधारणीय संसाधन एवं 2. असंधारणीय संसाधन।

संधारणीय संसाधन में एक वह हैं जिनकी उचित देखभाल, उपयोग एवं संरक्षण से पुनर्स्थापना या पुनः निर्माण हो सकता है। जैसे–वन, जल, चारागाह की भूमि की उत्पादकता या उर्वरापन, जंगली पशु आदि जबकि इनमें दूसरे संसाधन में सभी प्रकार के खनिज, पैट्रोलियम, कोयला आदि सम्मिलित हैं। इनमें से कतिपय धातुओं का अनेक बार उपयोग होता रहता है, जैसे–तॉबा, सोना, हीरा, लाल, माणिक आदि जबकि पैट्रोलियम, गैस, कोयला, जिप्सम, नमक आदि खनिज एक बार उपयोग के पश्चात् नष्ट हो जाते हैं।''

मानवीय उपयोग के आधार पर संसाधनों :– मानवीय उपयोग के आधार पर संसाधनों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है– 1. भोज्य पदार्थ, 2. कच्चे माल एवं 3. शक्ति के संसाधनों में विभक्त किया गया है। इनको हम आर्थिक संसाधन के नाम से भी पुकार सकते हैं।

➢ **प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधन में विभक्त किया जाता है**

प्राकृतिक संसाधन से तात्पर्य वे संसाधन हैं जो प्राकृतिक वातावरण ने हमें प्रदान किये हैं जिनके निर्माण में मानव का हाथ नहीं है किंतु जिन्हें हम विविध प्रकार से उपयोग में लाते हैं– 1. वायु, 2. सौर ऊर्जा, 3. भूमि, 4. मृदा, 5. जलीय संसाधन–नदियॉ, झीलें जल प्रपात, तलाब, सागर, 6. भूमिगत जल, 7. खनिज संसाधन – (I) धात्विक खनिज, (II) अधात्विक खनिज, (III) शक्ति से साधन। 8. प्राकृतिक वनस्पति–वन तथा चारागाह 9. जंतु संसाधन।

मानवीय संसाधन के अंतर्गत स्वयं मानव एक संसाधन है। मानव अपने श्रम, ज्ञान एवं तकनीक से विविध संसाधनों का उपयोग करतां है। प्रत्येक देश एवं क्षेत्र की जनसंख्या तथा उवकी शारीरिक एवं मानसिक क्षमता पर ही वहॉ का विकास निर्भर है। संस्कृति का विकास भी एक संसाधन प्रतिरूप है। ज्ञान–विज्ञान की प्रगति से ही प्राकृति संसाधनों का उचित उपयोग संभव है। संसाधनों के उपर्युक्त वर्गीकरण के विविध पक्षों से स्पष्ट है कि संसाधन प्राकृतिक पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं तथा पारिस्थितिक–तंत्र को संतुलित रखने में महती भूमिक निभाते हैं। इन पर एक ओर मानव की प्रगति एवं विकास निर्भर है तो दूसरी ओर पर्यावरण संरक्षण। अनियमित एवं अनियंत्रित रूप से संसाधनों का दोहन भविष्य के लिए चिंता का विषय है इसी कारण इनके संरक्षण का विचार प्रारंभ हुआ और आज विश्व के सभी राष्ट्र इस दिशा में सचेष्ट हैं।''

प्राकृतिक संरक्षण का महत्व :– मानव विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए करता आ रहा है। खाद्यान्नों और अन्य कच्चे पदार्थों की पूर्ति के लिए उसने भूमि को जोता है, सिंचाई और शक्ति के विकास के लिए उसने वन्य पदार्थों एवं खनिजों का शोषण और उपयोग किया है। पिछली दो शताब्दियों में जनसंख्या तथा औद्योगिक उत्पादनों की वृद्धि तीव्र गति से हुई है। विश्व की जनसंख्या आज से दो सौ वर्ष पूर्व जहॉ पौने दो अरब थी वहॉ सवा पॉच अरब पहुॅच चुकी है। हमारी भोजन, वस्त्र, आवास, परिवाहन, साधन, विभिन्न प्रकार के यंत्र औद्योगिक कच्चे माल आदि की खपत कई गुनी बढ़ गई है और इस कारण हम प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से गलत व विनाशकारी ढंग से शोषण करते जा रहे। प्रदूषण के कारण सारी पृथ्वी बहुत ज्यादा दूषित होती जा रही है, जिससे हमारी प्रकृति पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है, जिससे मानव सभ्यता का अंत बहुत ही निकट आ रहा है। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए ब्राजील ने सन 1992 में 174 देशों के पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें प्रकृति संरक्षण को ध्यान में रखते हुए बहुत सारे उपाय सुझाए गए। प्रकृति संरक्षण के साथ ही धरती में जीवन संभव है। अतः मानव के अस्तित्व एवं प्रगति के लिये प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अत्यावश्यक हो चला है।''

अधिक से अधिक पेड़–पौधे और सब्जियां उगाकर :– अधिक से अधिक पेड़ लगाए तभी हर दिन जो पेड़ कट रहे हैं उनकी भरपाई हो सकेगी। पेशेवर खेती में उपयोग किए जाने वाले रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को प्रतिबंधित करने के लिए कोशिश करें कि घर पर ही सब्जियां उगायें, इसके अलावा लोग पेपर के उपयोग को सीमित करके, वर्ष जल संचयन प्रणालीको नियोजित करके, कारों के उपयोग को सीमित कर और प्रकृति के संरक्षण के बारे में जागरूकता फैलाकर अपना बहुमूल्य योगदान दे सकते हैं।

पानी की खपत कम करके :– पृथ्वी पर पानी प्रचुरता में उपलब्ध है इसलिए लोग इसका उपयाग करने से पहले इसकी कम होती मात्रा की तरफ ज्यादा ध्यान देना जरूरी नहीं समझते हैं। अगर हम पानी का इसी तरह तेज गति से उपयोग करते रहें तो निश्चित रूप से हम्हें भविष्य में गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। पानी को बचाने के लिए हम कुछ सरल चीजों का प्रयोग में ला सकते हैं। जैसे ब्रश करने के दौरान नल को बंद करना, वॉशिंग मशीन में पानी का उपयोग कपड़ों की मात्रा के अनुसार ही करना, फव्वारें के जगर बाल्टी के पानी से नहाना तथा बचा हुआ पानी

पौधों में देकर प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं। पानी को बुद्धिमानी से इस्तेमाल किया जाना चाहिए। पानी का सही इस्तेमाल काफी तरीकों से किया जा सकता है, आरओ का अपशिष्ट पानी का उपयोग पौधों में देकर या घर को साफ करने के लिए इस्तेमाल करके ताकि पानी ज्यादा मात्रा में खराब न हो सके। अगर पानी का सही तरीके से इस्तेमाल नहीं किया गया तो वह दिन दूर नहीं जब हमें थोड़े से पानी के लिए भी तरसना पड़ेगा।''

बिजली का सीमित उपयोग :– प्रकृति संसाधनों के संरक्षण के लिए बिजली के उपयोग को भी सीमित करना आवश्यक है। बिजली की बचत हम कई तरह से कर सकते हैं जैसे–विद्युत उपकरण बंद करके खासकर जब वे उपयोग में ना हो या फिर ऐसे बल्ब अथवा ट्यूबलाइट का इस्तेमाल करके जिससे कम से कम बिजली की खपत हो या इन बल्बों के बदले एलईडी बल्बों को ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल में लाना आदि बिजली बचाने में एक महतवपूर्ण कदम हो सकता है। इसी तरह कागज, पेट्रोलियम और गैस जैसे अन्य संसाधनों का उपयोग भी एक सीमित दर में होना चाहिए।

कागज का सीमित उपयोग करके :– कागज पेड़ से बनता है। अधिक कागज का प्रयोग करने से मतलब है कि वनों की कटाई को प्रोत्साहित करना जो आज के समय में चिंता का विषय है। हमे यह सुनिश्चित करने कि जरूरत है कि जितना आवश्यकता है उतना ही कागज का उपयोग करें। प्रिंट आउट लेना और ई–कॉपी का उपयोग करना बंद करना होगा। तभी हम प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं।''

प्रकृति को फिर से हरा भरा बनाएं :– प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने के लिए हमें प्रतिवर्ष पेड़ जरूर लगाएं और उनका देखभाल भी करें क्योंकि इन्हीं जंगलों के लकड़ी से बने पेपर, फर्नीचर और अन्य वस्तुओं के निर्माण के लिए काटे जाते हैं यही मनुष्य की स्वर्थपर्ता के करण ही आज प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से विनाश हो रहा है जिससे प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास हो रहा है इसलिए प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करना आवश्यक है।

जागरूकता फैलाएं :– प्राकृतिक संरक्षण के बारे में जागरूकता फैलाना तथा इसके लिए इस्तेमाल होने वाली विधि का सही तरीका अपनाना अति महत्वपूर्ण है यह लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब अधिक से अधिक लोग इसके महत्व को समझें और जिस भी तरीके से वे मदद् कर सकते हैं करें। इसके अलावा अधिक से अधिक पौधे लगाना भी बेहद जरूरी है। लोग यात्रा के लिए साझा परिवहन का उपयोग करके और प्रकृति के संरक्षण के लिए वर्षा जल संचयन प्रणाली को नियोजित करके वायु प्रदूषण को कम करने की दिशा में अपना योगदान दे सकते है। जितना हो सके प्रकृति के संरक्षण के महत्व के बारे में उतनी जागरूकता फैलाएं।

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु सुझाव :–

1. प्राकृतिक संसाधनों का अधिक उपयोग करना बंद कर देना चाहिए। उपलब्ध संसाधनों को अपव्यय के बिना समझदारी से उपयोग करने की जरुरत है।

2. वन्य जीवों के संरक्षण के लिए जंगली जानवरों का शिकार करना बंद कर दिया जाना चाहिए।

3. वनों की कटाई को नियंत्रित करना चाहिए।

4. वर्षा जल संचयन प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए।

5. सौर, जल और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय संसाधनों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

6. कृषि प्रक्रियाओं में इस्तेमाल होने वाले पानी को दोबारा उपयोग में लाने की प्रणाली का पालन करना चाहिए।

7. कागज के उपयोग को सीमित करें और रीसाइक्लिंग को प्रोत्साहित करें।

8. पुराने लाइट बल्ब की जगह फ्लोरोसेंट बल्ब को इस्तेमाल करके ऊर्जा की बचत करें जिससे बिजली बचाई जा सके। इसके अलावा जब आवश्यकता नहीं हो रोशनी के उपकरण और इलेक्ट्रॉनिक आइटम बंद करें।

निष्कार्ष :– मनुष्य अपने जीविकोपार्जन के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करता है। आदि–मानव अपने पर्यावरण से प्राप्त वनस्पतियों एवं पशुओं पर निर्भर था। अतः उस समय संरक्षण की समस्या नहीं थी। कालान्तर में मनुष्य ने संसाधनों के दोहन की प्रौद्योगिकी में विकास किया। वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास द्वारा मनुष्य जीविकोपार्जी संसाधनों के अतिरिक्त उत्पादन के संसाधनों का भी दोहन करने लगा। आज आधुनिक तकनीकी की सहायता से संसाधनों का दोहन और भी बड़े पैमाने पर होने लगा है। प्रकृति का संरक्षण उन सभी संसाधनों के संरक्षण को संदर्भित करता है जो स्वाभाविक रूप से मनुष्यों की सहायता के बिना बने हैं। इनमें पानी, हवा, धूप, भूमि, वन, खनिज, पौधें और जानवर शामिल हैं। ये सभी प्राकृतिक संसाधन पृथ्वी पर जीवन को जीने लायक बनाते हैं। पृथ्वी पर मौजूद हवा, पानी, धूप और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के बिना मनुष्य का जीवन संभव नहीं है। इसलिए पृथ्वी पर जीवन तथा पर्यावरण को बरकरार रखने के लिए इन संसाधनों को संरक्षित करना अति आवश्यक है।

संदर्भ सूची :–

1. के. सी गुप्ता : जन्तु विज्ञान, राम प्रसाद पब्लिकेशन्स, आगरा, 2003, पृ. 221,
2. डॉ. एच. एस. गर्ग : पर्यारण अध्ययन, एसबीपीडी पब्लिकेशन्स, 2000, पृ. 94,
3. प्रो. बी.एल.ओझा : भारतीय अर्थव्यवस्था की प्राकृतिक समस्याएं, एसबीपीडी पब्लिकेशन्स, आगरा, 2002, पृ. 143,
4. डॉ. चतुर्भज मामोरिया : भारतीय अर्थव्यवस्था, एस बी पी डी पब्लिकेशन्स, आगरा, 2020, पृ. 155,
5. डॉ0 ए के. चतुर्वेदी : प्राकृतिक संसाधनों, आगरा पब्लिकेशन्स, 2016 पृ. 266,
6. कटार सिंह एवं अनिल शिशोधियाः पर्यावरण अर्थशास्त्र सिद्धांत एवं अनुप्रयोग,एसएजीई पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2019, पृ. 88,
7. डॉ0 दीना नाथ तिवारी : पर्यावरण एवं सतत् विकास एवं जीवन, ऑथोर पब्लिसर, दिल्ली, 2019, पृ. 98,
8. डॉ, डी.आर. खुल्लर : मानव भूगोल, न्यू सरस्वती हाउस प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली, 2016, पृ. 222,